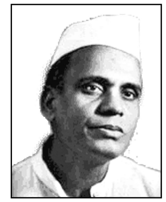

आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

संस्थाध्यक्ष

अॅड. आनंदमोहन माथुर

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
सानेगुरुजी

प्रेरक, संवर्द्धक संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादक कार्यालय
आंतर भारती
सानेगुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - ४१३५२२(महा.)
ईमेल : antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी-
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी-६०५०१४
ईमेल : editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है ।

visit us : antarbharati.org.in

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
मो.०९८२३१५६७७७

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबू
मो.०९८४३५०८५०६

संपादक
डॉ. विजया वारद ज्योतिराव लढके

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव पांडुरंग नाडकर्णी मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य गोपाल सत्पुरे

छायाचित्र : स्थानिय फोटोग्राफर

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक/ संपादक सहमत ही हैं ऐसा न माने

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power,gives nes dimesinons to the Potentiality, Skill Inspiration & Belief of the Youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाश सदाविजय आर्य द्वारा साईराम ग्राफिक्स लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

१	संपादकीय : सुशासन का स्वरूप कैसा हो ?	०५
२	आंतर-भारती : १ तुका म्हणे	१०
३	आंतर-भारती : २ महात्मा बसवेश्वर वचन	११
४	आंतर-भारती : ३ तिरुवल्लुवर वाणी	१२
५	धुनि तरुणाई : स्पर्श आणि स्पर्श	१३
६	चिन्तन-भारती : हिंसा के रास्ते से समानता नही आ कसती	१८
७	विशेष आलेख : बंधुआ मुक्ति एवं बचपन बचाओ आंदोलन का सफर लम्बा	२०
८	कथा भारती : श्रद्धांजली	२३
९	संस्थापरिय : लोकायत	२५
१०	काव्य भारती : उनके उच्छवास	२९
११	काव्य भारती : बस्ते घर से गए पर	३०
१२	समाचार भारती : बाल आनन्द महोत्सव	३१

इन अंक के सहयोगी

श्री. महारुद्र मंगनाळे

संपादक : बातमी मागची बातमी (मराठी साप्ताहिक)

प्रकाशक : मुक्तरंग प्रकाशन, लातूर

ए-१८,यशवंतराव चव्हाण व्यापारी संकुल,मेनरोड, लातूर (महा.)

अक्षर-सज्जा : राघवेंद्र जोशी

व्यवस्थापक : आत्माराम कांबळे

संपादकीय...

सुशासन का स्वरूप कैसा हो !

इस वर्ष शुरू करके दिसंबर २५ को 'सुशासन दिवस' के रूप में मनाने को लेकर पिछले दिनों में राज्य सभा में जो कुछ हंगामा हुआ, वह तो अब हो चुका है, मगर क्यों न सुशासन के स्वरूप को लेकर कोई गंभीर चर्चा संसद में और सत्ता की गलियारों में होती नहीं है, यही बड़ा सवाल बन कर सामने है?

'सुशासन दिवस' दिवसों की श्रेणी में एक न बन जाए, इसके लिए गंभीर बहस की जरूरत है । क्योंकि गांधीजी के जन्मदिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में,१४ सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में,ऐसे ही कई दिवस जोश के साथ तो मनाए जा रहे हैं, मगर उस 'दिवस' के उद्देश्य की पूर्ति या उसके आशय की पूर्ति तक नहीं हो पा रही है । ऐसे में 'सुशासन दिवस'पर भी सवाल उठता है । सुशासन की ओर ध्यान आकर्षित होना अच्छी बात है, वास्तवमें सुशासन की निष्ठा जागृत होकर सुशासन कायम होने की दिशा में कार्य हो,यही अपेक्षित है । सुशासन को लेकर या सुशासन के स्वरूप को लेकर तुरंत गंभीर चर्चा-शुरु हो जाए और भारतीय शासन व्यवस्था सुशासन का पर्याय बन जाए, यह अपेक्षणीय है।

'स्वराज'की संकल्पना पूरी होते ही 'सुराज' की संकल्पना शुरू हुई थी, मगर वह किसी भी रूप में आज तक साकार नहीं हो पा रही है । सुरा राज, चुरा राज, चोर राज, शेर राज.. ऐसे कितने ही रूप में भ्रष्ट राज रूप पैदा होकर सफ़लतापूर्वक पनपते हुए भ्रष्ट शासन को बढ़ावा मिल रहा है,इस कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है । भारत में कई सरकारें सुरा की कमाई पर टिकी हैं, यह एक निष्ठुर सच्चाई है । जन-के दुरुपयोग के जितने रास्ते खोजे गए हैं, इस उपलब्धि को 'सृष्टि का सबसे बड़ा आश्चर्य 'कहा जाए तो इसमें भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है । जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था में राजतंत्र के समय के अवगुणोंकी मात्रा इतनी बढ़ गई है कि सुशासन की परिकल्पना ही गुमराह हो रही है । सत्ता व शासन का वास्तविक उद्देश्य जनसेवा और लोकमंगल हो तो निश्चय ही सुशासन का स्वरूप जन-में हो,मानवीयता के हित में हो । सत्ता हासिल करने वाले से लेकर उसकी पूंछ बनकर पीछे लगने वाले तक अधिकार की

भूख, स्वार्थ की निर्लज्ज विडंबना, कूटनीतिक रवैये को जन्म देकर परोक्ष रूप से अपने ही अस्तित्व के लिए तड़पते हुए प्रत्यक्ष में जनसेवा डींग हो के घूमनेवालों की तादाद बढ़ रही है। इनको सबक सिखाने की ताकत जनतंत्र में होने के बावजूद वह इतनी दुर्बल हो रही है कि स्वार्थी व अवगुणात्मक जन की और तंत्रों की बढ़त जैसी तमाम विडंबनाओं की वजह से वह उठ नहीं पा रही है। 'सुशासन दिवस'के प्रति आयोजकों की यदि ईमानदारी हो तो शीघ्र ही सुशासन को लेकर गंभीर बहस हो और उसका समग्र स्वरूप तय होकर वह निष्ठापूर्वक लागू होना भी शुरू हो जाए।

सुशासन की चर्चा कौन शुरू करें ? सुशासन को लेकर 'सुशासन दिवस' के अवसर पर आयोजित होनेवाली ताकतें ऑनलाइन प्रतियोगिताओं की प्रविष्टियों में व्यक्त कारगर उपायों को लागू करने का कोई आश्वासन है या वैसे कुछ पुरस्कार बांटने का ही यह प्रहसन होगा? यदि बच्चों और छात्रों की सोच को कोरे पन्नों में लिखवाकर,उन्हें कूड़ेदान की संपत्ति भर बनानेका उद्देश्य है तो ऐसी प्रतियोगिताओं का क्या तुक है ? ये बच्चे जो 'कल के सुयोग्य नागरिक'ही नहीं,'कल के शासक' भी इन्हीं में से बनेंगे, उनके मन में कहीं लायक विचार हो तो वे सब क्रियान्वित होने की स्थिति क्यों न पैदा हो? सुशासन की परिकल्पना जिस रूप में आज वंचित है, भविष्य में और भी दुष्टव्यवस्था पैदा होने से बचाने के लिए आज ही हमें कारगर उपाय करने और निष्ठा से अपनाने की जरूरत है। सुशासन को लेकर राजनेता चुनावी घोषणाएं करते हैं मगर संसद में जाते ही सब भूल जाते हैं। संसदीय व्यवस्था को लेकर गांधीजी ने इसी दृष्टि से बड़ी आलोचना की थी। भारतीय गणतंत्र का अपना संसद साकार होने से लगभग चार दशक पूर्व ही 'हिंद स्वराज' में इस संबंध में अभिव्यक्त उनके विचार कई संदर्भों में आज भी प्रासंगिक लगने लगते हैं। विधायिका के बाद दृष्टि कार्यपालिका की ओर मोड़ें तो सवाल उठता है कि अधिकारी-यदि मंत्रियों और सत्ता को खुश करने और अपने स्वार्थ को ही साधने की सेवा में लीन हो तो सुशासन कौन बनाएँ और कौन बचाएँ? नीतियों की रूपाकृतितो संसद में होती और उसे लागू करने की निष्ठा अधिकारी वर्ग में न होती तो आशा की किरण किससे उदित हो? न्यायिक व्यवस्था से ? न्यायिक व्यवस्था को बचाने वाले न्यायाधीशों के गंभीर चिंतन को,कारगर निर्णयों पर भी रोक लगाने की साजिश संसदीय-तंत्र रच डालती है तो फिर कौन बचाएं सुशासन को? न्यायिक तंत्र पर विश्वास खोते हुए अक्सर यह आलोचनात्मक उक्ति सुनाई पड़ती है 'Justice delayed is justice de-

nied' सुशासन की दिशा में न्यायव्यवस्था की बड़ी भूमिका निभा सकती है, मगर उसकी कई सीमाएँ हैं, सबसे बढ़कर कई मामले सालों तक खिंच जाने से न्याय ही एक बड़ी विसंगति बनकर रह जाता है। सुशासन को सुनिश्चित करने या इस संकल्पना को साकार बनाने में न्यायिक तंत्र की अपनी सीमाएँ हैं। एक उम्मीद लेकर जनतंत्र के चौथा स्तंभ कहलाने वाली मीडिया की ओर हम मुड़े, तो सच्चाई यह है कि वह भी लगभगपूरी तरह से बिक चुकी है या पूरी तरह से उसका मति विभ्रम हो चुका है। सालों तक मामलें सड़ाने के लिए विवश हमारा न्यायिक तंत्र अब जिस मुँह से सुशासन का पैगाम बनने से वंचित हो पा रहा है,पल भर में सारे 'राज़' इकट्ठाकर हड़कंप मचाने में सक्षम मीडिया भी अपने बिकाऊ मुंह से राज की ओढ़नी बनने की नौबत में क्या कोई हित साध सकता है ? ऐसे में अब यह चर्चा बेचारे शिक्षक वर्ग के लिए दी गई कि 'सुशासन को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी और नवोन्मेश का उपयोग कैसा हो?'। चर्चा के लिए दिया गया मुद्दा तो बेहद महत्वपूर्ण है, मगर क्या उन चर्चा परिसंवादों के निष्कर्षों को अपनाने में कोई ईमानदारी दर्शायी जाएगी? यदि सचमुच इस दिशा में तंत्रनिष्ठा हो, शिक्षा में पनप रही दुष्ट शासन व्यवस्था में सुधार की क्यों न कोशिश हो रही है ? कितने ही ऐसे विश्वविद्यालयों के पदाधिकारियों के विरुद्ध आरोप हैं, जो करोड़ों का अर्जन कर रहे हैं, उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई होती क्यों नहीं? उनका यह अर्जन किनके लिए? वैसे विश्वविद्यालयों के बड़े पदों में नियुक्तियों में, और इन पदों को हथियाकर शिक्षा को निरा 'व्यापार'बनाने की दुष्ट चेतना कब खत्म होगी? इनके द्वारा इस रूप में लूटपाट मचाने का बल सत्ताधारी वर्ग से पाने की हरकतों का दृष्य इसमें स्पष्ट रूप से नज़र आता है। भावी नागरिकों को तैयार करनेवाले, नव नागरिकों को चेतना प्रदान करने वाले शिक्षण संस्थान जब तक खुद सुशासन को नहीं मानते या अपनाने की दिशा में आगे नहीं बढ़ते, विराट सरकारी तंत्र से क्यों अपेक्षा की जाए?

सुशासन के प्रति सचमुच ईमानदारी होती तो नई प्रौद्योगिकी और नवोन्मेशों से सुशासन को सचमुच कारगर ढंग से बढ़ावा दिया जा सकता है। संपादकीय की इन सीमित पंक्तियों में इसकी समग्र चर्चा और आदर्श प्रारूप का प्रतिपादन तो संभव नहीं है (इन्हीं संपादकीय पृष्ठों में समय-समय पर इस दिशा में कुछ हद तक संकेत दिया जा चुका है..,मगर यह जरूर कहा जा सकता है कि सुशासन की संकल्पना को ठेस पहुँचाने वाले भ्रष्टाचार को रोकने की दिशा में प्रौद्योगिकी और नवोन्मेशों को कारगर

अस्त्रों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है,जिससे सुशासन की व्यवस्था की दिशा में आज नहीं तो कल तक तो हम एक कदम आगे बढ़ाते नज़र आएंगे। कल का भारत युवा वर्ग से संपन्न भारत होगा,अतः आज जरूरत इस बात की है कि युवा वर्ग को सदाचार संपन्न ईमानदार नागरिक बनाने की दिशा में कारगर भूमिका शैक्षिक संस्थान ही निभा सकती हैं,बशर्ते कि इनमें तुरत भ्रष्टता को खत्म कर सुशासन के नमूनों का स्थापित करने की कोशिश हो। बड़ी मात्रा में शिक्षण संस्थाओ में प्रौद्योगिकीय सुविधाएँ उपलब्ध हैं,अतः तुरंत वहाँ पूरी ईमानदारी से सुशासन का एक आदर्श स्थापित हो जाए और उसी गति से देश में सुशासन कायम हो, इस दिशा में निष्ठापूर्वक कदम उठाए जाए तो वही 'जन हित'है । जनचेतना को मारने के कारगर अस्त्र के रूप में मीडिया का प्रयोग करते हुए संसद की चर्चाएं भी मुख्य मुद्दों को छोड़कर गौण मुद्दों के बहस की ओर उन्मुख हो रही हैं । 'सुशासन दिवस'संबंधी तथाकथित परिपत्र को लेकर संसद में जितना हंगामा हुआ, वह यदि सुशासन के स्वरूप को और उसे लागू करने को लेकर होता तो कितना ही हित होता इस देश का !

– ए.सी.जयशंकर बाबु

मासूम सुमनों के प्रति अश्रुपूर्ण श्रद्धांजली

पेशावर में स्कूली छात्रों पर आतंकियों के अमानवीय हमले से मरनेवाले मासूम बच्चों और अन्य लोगोंकी आत्म को असीम शांति मिले, इसी प्रार्ना के सा..नव वर्ष का हर्ष हमें पूरी निष्ठा से प्रत्यक्ष व परोक्ष से इस दुनिया से आतंक को खत्म करने की दिशा में संकल्पबद्ध होने के दिशा में हम मोड़ दें,यही आतंक से मारे गये उन मासूम सुमनों की आत्माओं को हमारी सच्ची श्रद्धांजली हो सकती है..

नव वर्ष की शुभ कामनाएं

गणतंत्र दिवस की सभी भारतवासीयोंको शुभ कामनाएं

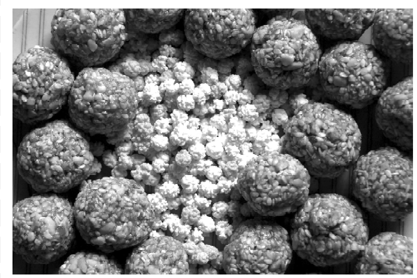

मकर संक्राति के अवसर पर आप सभी वाचकों को **शुभ कामनाएं**

महात्मा गांधी स्मृति दिन –

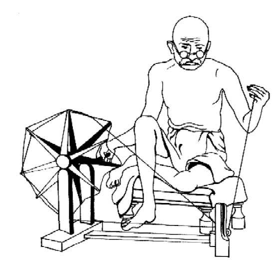

तुका म्हणे

जयाचिये द्वारीं सोन्याचा पिंपळ

जयाचिये द्वारीं सोन्याचा पिंपळ । अंगी ऐसे बळ रेडा बोले ।।धृ।।

करील तें काय नव्हे महाराज । परि पाहे बीज शुद्ध अंगी ।।१।।

जेणें हे घातली मुक्तीची गवांदी । मेळविली मांदी वैष्णवांची ।।२।।

तुका म्हणे तेथे सुखा काय उणे । राहे समाधाने चित्ताचिया ।।३।।

English Translation

At whose door stands the golden Peepul tree
Zayaachiye dwaaree, soniyaachaa pimpala

Santa Gyaneshwara at whose door
Stands the golden Peepul tree
And who makes the bison speak (the Vedas)
He is of infinite capacity to bestow goodwill
But then he chooses those of good character for his blessings.

He brings all the devotees of Vithoba together
And opens the gates of self-realisation (Mukti) to all of them!
Says TUKA ,there is abundant happiness here.
Let us stay here in absolute contentment.

महात्मा बसवेश्वर वचन

मूल कन्नड वचन :

मर्त्य लोकवेंबुदु कर्तारत कम्मटवय्य
इल्लि सल्लुववरु अल्लियू सल्लुवरय्य
इल्लि सल्लदवरु अल्लियू सल्लूरय्य
कूडल संगम देव

हिन्दी काव्यानुवाद

मृत्यू लोक कर्ता की कर्मभूमि है भाई
यहाँ अच्छी तरह जीने वाले वहाँ भी अच्छी जिंदगी बसर करेंगे ।
यहाँ जो ठीक से नहीं जी पाते, वहाँ भी जी नहीं पाएँगे ।
कूडल संगम देव

सारांश,

यह मृत्यू लोक भी उसी ईश्वर ने बनाया है ; अत: यहाँ जो सफलता से जीवन बिताता है वह अन्य लोक में भी सफल जिन्दगी बिता सकता है । यदि कोई यहाँ असफल रह जाते हैं तो वहाँ भी असफल ही रह जायेंगे ।

क्या मृत्यू लोक क्या स्वर्ग लोक ? आप अपने कर्मो से इस मृत्यू लोक को स्वर्ग बना सकते है । महात्मा बसवेश्वरने अपने और एक वचन में यह कहा हैं कि सदाचार ही स्वर्ग है अनाचार ही नर्क हैं । स्वर्ग और नर्क की संकल्पना व्यक्ति से कर्म में निहित है । अतः इसी लोक में अपने अच्छे कर्मों से स्वर्ग उतार सकते हैं । यदि यहाँ असफल रह जाते हो अन्य लोक में कैसे सफल रह पाओगे ? अर्थात असफल ही रह जाओगे । तात्पर्य इसी जीवन को सफल बनाओ ।

डॉ. इरेश स्वामी
ब्रह्मचैतन्य नगर, सोलापूर
फोन : ०२१७-२३४२१९४ मो.९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल-संततिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ. सी. जयशंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्मखंड)

इल्लरवियल्(गृहस्-धर्म)

अध्याय - ७. मक्कट् पेरू ८ (प्राप्ति)

ईन्र. पोळुदिर् पेरिदुवक्कुम् तन्मगनैच्
चान्रोन् एन्क्केट्ट ताय् । (०२ - ६९)

बेटे का जन्म -
माँ खुश;योग्य सुन
और भी खुश ।

भावार्थ - बेटे को जन्म देते समय माँ को जितनी खुशी मिलती है,वह वेटा बड़ा होकर लायक कहलाने पर और भी ज्यादा खुशी मिलती है ।

मगन्तन्दैक्कु आट्रुम् उदवि इवन्तन्दै
एन्नेट्रान् कोल्एनुम् चोल् । (०२ - ७०)

बेटा तप की
देन ? जन-ही
पिता को देन ।

भावार्थ - पिता के हित में बेटे को बस इतना ही करना है कि उसे देखकर पिता से कोई सवाल करें कि ऐसे सुपुत्र को पाने आपने कैसी तपस्या की ।

स्पर्शमणिस्पर्श

शैला सावंत

वाहिनी की तेरहवीं राष्ट्रीय परिषद । अभी - अभी १, २, ३ अक्तुबर २००८ को भुसावल में सम्पन्न हुई । परिषद के एक दिन पहले एक बैठक भी हुई । कौन आ रहा है, कब आ रहा है, क्या करनेवाला है ? मुझे कुछ भी पता नहीं था । मैंने ही पता नहीं किया था । भुसावल में परिषद है बस । नौकरी के कारण, कुछ करने के लिए एक क्षण का भी फुरसत नहीं थी । जो कुछ करना था उसे ज्ञानेंद्र, रवि, सुधाकर कर रहे थे । लेकिन...

एक दिन पहले सुनने में आने लगा, बिहार से यह आ रहा है तो गुजरात से वह, ओरिसा से कोई और । अचानक उत्साह जगा । एकदम अनुभूति हुई, अरी, हमारे यहां राष्ट्रीय परिषद है । मैं भी काम में लगी । इसे फोन कर, उसे फोन कर, मेनू निश्चित कर । सारे खाद्य पदार्थ खानदेश से होने चाहिए, इसकी जोडतोड, हॉल का सुशोभन, रंगोली, भागदौड । इस सारी दौड भाग में आनंद आ रहा था... परिषद का यजमान पद मैंने अपने आप ही ले लिया था । शायद काफी दिनों बाद सभी लोगों से भेंट होनेवाली थी, इसी कारण । वाहिनी के सारे कार्यकर्ताओं में एक अलग ही अपनापन है, एक दूसरे के प्रति लगाव है । ऐसा शायद ही कसी दूसरे संगठन में दिखाई देगा। मायके के लगाव से सासूरवासिनी मुदित हो जाए, बिलकुल वैसी ही हुई थी मेरी अवस्था ।

मेरा अपना कोई मायका नहीं था । लेकिन रमेश ने मुझे स्नेह से ओतप्रोत इन्सान दिये । वंचितों के लिए अपना जीवन न्योछावर करनेवाले, सिद्धांत के लिए जी जान लगा देनेवाले, कष्ट उठानेवाले, संघर्ष करनेवाले, ध्येय के पीछे पागल ये सारे मनुष्य मुझे हमेशा ही अपने लगते रहे । रमेश का भी ऐसा ही होता था। वाहिनी का कोई आते ही उसका चेहरा खिल उठता था । अन्यथा वह हमेशा गंभीर ही लगता था । परिवर्तन के प्रति उसकी समझ, विकास के लिए उसके अलग-अलग प्रयोग , उस समय मेरी समझ से बाहर थे । इस कारण इन विषयों पर चर्चा करने मेरा उसे साथ नहीं मिलता था । मैं अपने घर

में ही अच्छी तरह रम जाती थी । लेकिन रमेश लगातार किसी न किसी सामाजिक कामों मे व्यस्त रहता था । एक बार सभी के आग्रह के कारण काश्मीर यात्रा पर गए । दर्शनीय स्थल देखते-देखते वह एकदम मुझसे बोला, 'इन सारे लोगों को आगे जाने दे, हम जरा इस गांव मे रुकेंगे, लोगों से बात करेंगे, फिर आगे बढेंगे....।' मैं झल्लाई हुई थी ही । अन्त में उसे अपना इरादा बदलना पडा।

एक बार पुना से मुंबई आते समय बस-यात्रा में सुंदर प्रकृति के दर्शन हो रहे थे। मैं सुध-बुध खोकर उसे देख रही थी । रमेश बीच में ही बोला, 'यहां पहले घनी झाडी थी । आज देख, कैसा उजडा हुआ है । एक वृक्ष चार सालों में इतनी लकडी देता...।' क्या क्या सुनाते रहा । ऐसा क्रोध आया था ।

ऐसी बातें मैं उस समय नहीं चाहती थी । समझ में भी नहीं आती थी । रमेश को तो और कुछ बतियाने आता ही नहीं था । उसकी घुटन आज समझ में आती है ।

मैं रमेश के कारण वाहिनी में आयी और यह सारी मंडली मेरी अपनी हुई । रमेश की अनुपस्थिती में इनके ही कारण मैं संभल पायी । अन्यथा मेरा क्या हुहा होता, कल्पना ही नही की जा सकती । जी तो लेती, लेकिन कायम एक निराशा की छाया में, अन्य महिलाओं के जीवन जैसा जीवन ही हिस्से में आता । आज रुचि के साथ जो कुछ करने की इच्छा होती है, उसमें सभा, संम्मेलन, प्रशिक्षण इनमें उत्साह से सहभागी होती हूँ, रुचि के विषय पर व्याख्यान देती हूँ, सामाजिक काम में आनंद अनुभव करती हूँ, संभव हो उतना, बच्चों को उत्साही वातावरण दे सकती हूँ, वह वाहिनी के साथ हूँ इसी कारण ।

सुधाकर, कुंजी हमेशा ही साथ में रखते हैं । संस्था के निमित्त हम तीनों हमेशा ही साथ होते हैं । शेखर, वासू, निर्मला, उमेश, मधू इन्हें किसी भी समय बिना किसी संकोच के आवाज जा सकती है । माया, चंदू, सुनन्दा, किशोर, श्रीराम, शोभा, निर्मला, प्रदीप, रविंद्र, आर.पी. नितीन, चंपू, सीमा, ज्ञानेंद्र, जयन्त, राजेद्र सिंग, अन्वर सभी रमेश न होने पर भी आस्थापूर्वक आते है, रुकते हैं और मुझे ऊर्जा देकर जाते हैं ।

अमर, कलानन्द, प्रियदर्शनी... भुसावळ होते हुए आते-जाते रुकना संभव न हुआ तो फोन पर पूछताछ करते हैं । एक बार डॉ.निर्मल का फोन

आया । बोला, ''राही को पढने के लिए औरंगाबाद में रखने का विचार होगा तो सोच... यहां अच्छे कॉलेज हैं । मैं उसकी देखभाल कर सकूंगा । डॉ. निर्मल के फोन के कारण मैं एकदम चिन्तामुक्त हुई । भारी तनाव में थी, मैं । मै निश्चिंत हुई... विचार आया, क्या, कहा जाए, इस रिश्ते को ? वासंती आस्था से राही और किरण इनके विषय में पुछताछ करते रहती है । उसके आत्मीयता को सटीक शब्दों में क्या संबोधन दिया जाए, यह सूझता नहीं ।''

रमेश के और दो भाई हैं, बहन नहीं । रमेश सब में बडा, रमेश की माँ ने स्वयं नौकरी करते हुए ससुर को पढाया । ससुर की नौकरी के बावजूद तंगहाली की गृहस्थी में तीनों की शिक्षा हुई । रमेश इंजिनिअर होगा और अपने जीवन में सुखभरे, आराम के दिन आएंगे, इस आशा में उसकी माँ थी...। लेकिन बी.ई. करते-करते अमर से मुलाकात हुई और खींचा गया । माँ-बाप के हठ के कारण बी.ई.पूरा तो कियाा लेकिन गृहस्थी से भाग निकला । उस समय उसकी माँ पर क्या बीती होगी, इसका अमर को ही अच्छी तरह पता है ।

छोटे भाई पर अचानक दायित्व का बोझ आएगा, वह पढ नहीं पाएगा, मेरे कारण उसकी होनी होगी, ऐसा सोचकर रमेश ने नौकरी स्वीकार की और नासिक औष्णिक विद्युत केन्द्र में अभियंता के रूप में दाखिल हुआ । भुसावल के ग्रुप का पता चला। कुंजी जैसे भूतों से मुलाकात हुई और रमेश को बाधा चढी ।

लेवा पाटील समाज में बडा दहेज देने का चलन था । चालीस तोला सोना और चालीस हजार रुपए । यह हुआ चालीस बाय चालीस । इसे बाय-बाय पद्धति भी कहा जाता है । रमेश ने इस प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई । यावल, रावेर, भुसावल इन तहसीलों के कई गांवों मे गधे पर बैठ कर मोरचे निकाले । प्रतिकात्मक दुल्हे को गधे पर बिठाकर जुलूस निकाले, सभाएँ की । भारे पंचायत (जाती पंचायत) को थर्रा कर छोडा ।

इस क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के कई शिविर आयोजित किये । उनके लिए लगातार घूमता रहा । कभी नियमित वेतन के साथ अवकाश, तो कभी विना वेतन का अवकाश लेकर । कभी शिविर के लिए पूरा वेतन खर्च कर, तो कभी खेत से घर पहुँचा अनाज शिविर के लिए देकर । रमेश के ऐसे व्यवहार

के कारण माँ को बडा सदमा पहुँचता था । वेतन-वितरण के समय वह रमेश के कार्यालय पहुँचती थी और मिले उतने पैसे लेकर आती थी । अन्यथा रमेश की कमाई घर के लिए नहीं होती थी ।

बातें करते समय माँ रमेश के ऐसे तकलीफ देह व्यवहार के विषय में बोलती थी। बचपन में एकदम आज्ञाकारी रमेश, जैसे-जैसे बडा होने लगा, वैसे-वैसे परेशानी बढने लगी ।

समाज में, विषमता उसे मान्य ही नहीं थी । उसे जो पसंद आता, वही करता था, वैसा ही व्यवहार करता था । इस तरह का था उसका पारदर्शी व्यवहार सारी बातें, शास्त्र, विज्ञान की कसौटी पर जांच-परख लेने की आदत । और माँ ?

मॉ का जीवन ब्राह्मणों के पडोस में बीतने के कारण, नहीं वे सारी बुरी रुढियाँ, धारणाएँ, उसमें रिसती रही । नही आने चाहिए थे वे संस्कार उसके व्यवहार में आ गये । छूत-छात, पूजा-अर्चा के पीछे होनेवाला व्यय, समय और पैसे का भी अपव्यय । इन विषयों पर हमेशा रमेश और माँ का वाद-संवाद होता था ।

इसके गले में एक बार पत्नी बांध दी कि यह रास्ते पर आएगा, ऐसा विचार माँ ने किया । इस तरह के किसी भी पारिवारिक मामले में पिताजी का कोई भी आग्रह, हठ नहीं होता था । रमेश विवाह के लिए राजी न होने के कारण माँ कई ब्राह्मणों से मिलकर आयी । जिस किसीने जो - जो कहा, वह सब किया । जप किया, उपवास किये, पुजा की । अन्त में एक ने अखंड दिया जलाने के लिए कहा। मैं वहां पहुंचने तक वह जल रहा था । रमेश मानता नहीं, ऐसा स्थिति में प्रथम छोटे भाई का विवाह किया । दोनों देवरों को छूत-छात

हमारा ई-मेल का पता

E-mail : antarbharati.patrika@gmail.com

raavas@rediffmail.com

लेख इस ई मेल पर भी भेजे जा सकते हैं ।

आंतर भारतीय पत्रिका के ग्राहक बने/बनाएँ

का पालन करने की आदत थी । लेकिन इसकी परेशानी घर के पुरुषों को नही, औरतों को ही होती है । तिलोत्तम को यह सारा सहना पडा पियुष के जन्म के बाद, ये सारी रुढियाँ, उसके लिए जानलेवा लग रही थीं । वह सारी बातें रमेश को बताती थी । इन बातों में उसे अपने पति राजू से रमेश करीबी लगता था । मीना को भी रमेश एक सहारा लगता था । वैसा मीना रमेश के साथ खुलकर संवाद नहीं करती थी । लेकिन गुस्सैल पति को डर बताने के लिए उसे रमेश करीबी लगता था ।

मैं भी हो सके उतना सहते सहते माँ को समझाती थी । चमत्कांरो के प्रात्यक्षिक घर में ही करके दिखाती थी । उन्हे यह सारा समझ में आता था लेकिन मन तैयार नहीं होता था ।

पहले ही रमेश के स्वभाव और व्यवहार के कारण परेशान माँ के साथ मैं प्रतारणा कर रही थी, उन्हें दुख न पहुँचाते हुए । मैं छूत-छात का पालन करती हूँ, ऐसा दिखाती थी । पूजा नहीं लेकिन नमन कर, कहने पर माथा टिकाती थी. कुछ दिन ऐसा ही चला। बाद में उन्होंने मेरे पीछे लगना छोड दिया । वहिनी का काफी मंडळी होशंगाबाद में हमारे घर रहकर गयी । लेकिन माँ ने, उन्हें इनमें से किसी की भी आंच नही लगने दी । (क्रमशः)

'धुनी तरुणाई'

संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब

पृष्ठ :१६०, कीमत : १५० रुपये

प्रकाशक : परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई-४३१५१७ (महा.)

अनुवादक : ज्योतिराव लढके

चेतस,२२, बाजीप्रभू नगर, नागपूर-४४००३३

आंतर भारती (मासिक)
के ग्राहक बनिए / बनाइए

चिंतन भारती – १

हिंसा के रास्ते से समानता नहीं आ सकती

महात्मा गांधी

आर्थिक समानता अहिंसक स्वराज्य की मुख्य चाबी है । आर्थिक समानता के लिए काम करने का मतलब है, पूँजी और मजदूरी के बीच के झगडों को हमेशा के लिए मिटा देना । इसका अर्थ यह होता है कि एक ओर से जिन मुठ्ठीभर पैसेवाले लोगों के हाथ में राष्ट्र की सम्पत्ति का बडा भाग इकठ्ठा हो गया है, उनकी संम्पती को कम करना और दुसरी और से जो करोडों लोग आधापेट खाते और नंगे रहते है, उनकी संपत्ती मे वृद्धि करना.

जबतक मुठ्ठी भर धनवानों और करोंडों भूखे रहनेवालों के बीच बेइन्तहा अंतर बना रहेगा, तब तक अहिंसा की बुनियाद पर चलनेवाली राज्य-व्यवस्था कायम नहीं रह सकती । आजाद हिंदुस्तान में देश के बडे-से-बडे धनवानों के हाथ में होगा, और तब नयी दिल्ली के महलों और उनकी बगल में बसी हुई गरीब मजदूर बस्तियों कें टूटे-फूटे झोपडों के बीच जो-जो दर्दनाक फरक नजर आता हे,वह एक दिन भी नहीं टिकेगा । अगर धनवान लोग अपने धन को और उसके कारण मिलनेवाली सत्ता को खुद्द राजी-खुशी से छोडकर और सबके कल्याण के लिए सबके साथ मिलकर बरतने को तैयार न होंगे, तो यह तय समझिये कि हमारे देश में हिंसक और खूँख्वार क्रांति हुए बिना न रहेगी ।

अहिंसा कैसे काम करती है

ट्रस्टीशिप या सरपरस्ती के मेरे सिद्धान्त का बहुत मजाक उडाया गया है, फिर भी मैं उस पर कायम हूँ । यह सच है कि उस तक पहुंचने यानी उसका पूरा-पूरा अमल करने का काम कठिन है । क्या अहिंसा की भी यही हालत नहीं ? फिर भी १९२० में हमने यह सीधी चढाई चढने का निश्चय किया था, अबतक हमने उसके लिए जो पुरुषार्थ किया है, यह कर लेने जैसा था, इसे अब हम समझ चुके है । इस पुरुषार्थ की खास बात यह है कि रोज -रोज की खोज और कोशिश से हमें अधिकाधिक यह जान लेना है कि अहिंसा का तत्त्व किस तरह काम करता है । साथियों से उम्मीद की जाती है कि वे सब संजीदगी और लगन के साथ, सचेत रहकर, इस बात का पता लगाएँ कि अहिंसा क्या चीज है, कैसे उसका व्यवहार करना है और वह किस

तरह अपना काम कर करती है ।

सबको इस सवाल पर भी सोचना है कि आज की सामाजिक व्यवस्था में मनुष्य मनुष्य के बीच जो तरह तरह की असमानताएँ मौजूद हैं, वे हिंसा से दूर होंगी या अहिंसा से मेरे खयाल में हिंसा का रास्ता कैसा है, यह हम जानते है। उस रास्ते समानता के मामले में कही सफलता मिली, ऐसी बात जानी नहीं । अहिंसा के जरिये समाज में हेर-फेर करने के प्रयोग अभी चल रहे हैं और उनकी तफसील तैयार हो रही है । इन प्रयोंगो में प्रत्यक्ष दिखाने जैसा तो कोई खास या बडा काम हमने किया नहीं है । फिर भी इस तरीके से समानता की दिशा में काम तो शुरू हो चुका है और चूंकि अहिंसा का रास्ता हृदय-परिवर्तन का रास्ता है, इसलिए उसमें जो भी हेर-फेर होते है, वे कायमी होते हैं । वह अपनी इमारत पर होनेवाले तमाम बाहरी या अंदरुनी हमलों का सामना करने की ताकत रखता है ।

मेहनत करके एक एक ईंट चुननी है

जो लोग यह समझकर चलते हैं कि बडे-बडे सुधार तो स्वराज्यकायम होनेपर ही होंगे या किये जायेंगे, वे सब जड से ही इस बात को समझमें गलती करते हैं कि अहिंसक स्वराज्य का काम किस तरह होता है । यह अहिंसक स्वराज्य किसी अच्छे मुर्हूत में अचानक आसमान से नही टपक पडेगा, बल्कि जब हम सब मिलकर एक साथ अपनी मेहनत से एक एक ईंट चुनते चलेंगे, तभी स्वराज्य की इमारत खडी हो सकेगी ।

''रचनात्मक कार्यक्रम'' से

आन्तर भारती के प्रकाशन

'साने गुरुजी चित्रावली – १२० रु.'
'यति यदुनाथ – ५० रु.' 'साने गुरुजी विशेषांक – ५० रु.'
'आन्तर भारती गीतमाला – १५' 'कॅसेट/सी.डी.-३० रु.'
प्राप्ति स्थान : आंतर भारती संकुल
औराद शहाजानी – ४१३५२२ (महा.)
Mo. 09823156777 E-mail : aryavidyavanshi@gmail.com

विशेष आलेख-१

बंधुआ मुक्ति एवं बचपन बचाओ आंदोलन का सफर लंबा

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलास सत्यार्थी से पत्रकारों के प्रश्न व सत्यार्थी के उत्तर

"मैं स्वामी दयानंद एवं स्वामी विवेकानंद के प्रभाव से संन्यासी होना चाहता था"

– कैलास सत्यार्थ

प्रश्न : नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद आपके जीवन मे क्या परिवर्तन आया ?

कोई खास फर्क नही आया । मेरा अब भी सारा समय बचपन बचाओ आंदोलन के कार्यालय मे जाता है । काम करने की पद्धती में कुछ परिवर्तन आया है । नोबेल पुरस्कार मिलने के बाद हजारों लोग मिलने आते है । और इस आंदोलन के बारे में जानकारी लेते है । बहुत अधिक समय साक्षात्कार मे निकल जाता है ।

प्रश्न : आप बच्चों के अधिकारों के लिए गत ३० वर्षों से संघर्षरत है ? इस सबंध में आपके अनुभव क्या है ?

उत्तर : मेरा यह अनुभव है की, दुनिया में कुछ भी असंभव नही है । मैने यह मुद्दा तब उठाया जब इसके देश मे कोई चर्चा नहीं थी । हमने उस समय कार्य करना प्रारंभ किया था । जब अनुसंधान सामग्री का अभाव था । यह आंदोलन केवळ गरीब बच्चों के लिए नहीं है । समस्या थी बच्चों की गुलामी की ओर मानवाधिकार की । मैंने यह भी सीखा की दुसरोंको विश्वास करना चाहिए और टीम बनानी चाहिए । इस क्षेत्र में राजनीतिक प्रेरणा की अपेक्षा अध्यात्मिक प्रेरणा से मैने आंदोलन प्रारंभ किया ।

प्रश्न : क्या हिंदु धर्म के प्रति आस्थावान है ?

उत्तर : मेरा ईश्वर पर अतूट विश्वास है जो एक है सर्व व्यापक है । मेरा किसी

संप्रदाय या कर्मकांड पर विश्वास नहीं है । मैं मंदिरों मे दर्शन करने भी नही जाता । मेरा विश्वास है की, ईश्वर निश्चल बच्चो के माध्यम से अपने को अभिव्यक्त करता है ।

प्रश्नः आपने कहा कि जब मैंने आंदोलन चलाया तब इस दिशा मे कुछ भी काम नहीं हुआ था । क्या आपका कोई मार्गदर्शक या गुरु भी है ?

उत्तर : मेरा गुरु तो कोई नहीं है परंतु मुझे अनेक महापुरुषों ने प्रभावित किया। मुझे महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस और भगतसिंह के जीवन से बहुत प्रेरणा मिली।

प्रश्न : सिव्हील सोसायटी से आपको क्या प्रेरणा मिली ?

उत्तर : इस बारे मे मैं कुछ नही कह सकता । हां ! मै स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद से हमेशा प्रभावित रहा हूँ। मैने एक बार संन्यास लेने की सोची और निर्णय लिया की विश्वबंधुत्त्व की भावना को मूर्त रुप देणे के लिए त्याग, बलिदान, प्रेम,परोपकार की भावना से मानव जाती को प्रेरित करुंगा परंतु मै अन्य कार्यो मे उलझ गया । मैं विदर्भ (म.प्र.) मे छात्र राजनीति मे हमेशा सक्रिय रहा।

प्रश्न : आपको युरोप और अमेरिका में दर्जनों पुरस्कार मिले है । बालअधिकारों के लिए दो सौ एन.जी.ओ. के साथ भारत, पाकिस्तान, नेपाल और बांग्ला देश में आपने कार्य किए है । और वैश्विक मार्च मे भाग लिया है परंतु क्या कारण है की आप को सामाजिक कार्यकर्ताओं और पत्रकारों के अलावा कोई नहीं जानता ?

उत्तर : मै एक साथ दो स्थलों पर काम करता था । प्रत्यक्ष रुप से भारत वर्ष के सुदुरस्त क्षेत्र में बच्चों, उनके मातापिता और समाज के साथ और दुसरा विश्व से बाहर धाना और एवरीकोस्ट मे । नीति निर्धारण की उच्चस्तरीय कमेटी में भी मुझे समय देना पडता था । इन कमिटियों मे बाल अधिकारों के लिए कानुन बनाना, बजट का प्रावधान करना, बाल मजदुरों की शिक्षा की व्यवस्था करना और गुलामी की चक्की में पिस रहे बच्चों को मुक्त कराना । यदि आप विकास के क्षेत्र में और मीडिया में सक्रिय रहते है और सम्पर्क बनाये रखते हैं तब आपको अनेक लोग जानते है । तब आपको मान्यता भी मिलती है और अधिक से अधिक लोग जानने लगते हैं । मैने इन चीजों की कभी परवाह नहीं की । इसका मतलब यह नहीं की, मै साधू हूं । मुझे खुशी है की, मीडिया ने मेरे साथियों का नाम भी प्रसारित किया । इससे स्पष्ट है की, यह आन्दोलन व्यक्ति पर केन्द्रित नही हैं । हमारे देश में ग्लैमर, यश, मानवीयता, व्यक्ति का व्यक्तित्व सब एक दूसरे में मिश्रित है । यदि आप प्रसिद्ध हैं तो आप प्रामाणिक हैं मैं इस विचारधारा से सहमत नही हूं । प्रामाणिकता तो आप के दृढ

विचारों मे निहित है और आपके कार्य का परिणाम धरातल पर दिखाई देता है । यह सब मानसिकता पर निर्भर करता है । प्रायः गरीबों के लिए जो धन दिया जाता है उसे मानवीयता माना जाता है और उससे आप को प्रशंसा और मान्यता दोनो मिलती है परन्तु जब आप बच्चों के लिए न्याय, मानव अधिकार, समानता और मूलभूत समस्याओं के बारे मे बात करते है तब उस प्रकार की मान्यता नहीं मिल पाती । इसका एक राजनैतिक पहलू भी है । यदि आप राजनीति मैं हैं कुछ अच्छा काम करने का प्रयास कर रहे है तब मीडिया आपको बहुत प्रचारित करता है । हम कभी भी किसी राजनैतिक दल से सम्बद्ध नहीं रहे ।

अभी बहुत कुछ करना है ।– (५ से १४ वर्ष के बच्चियां जो बालश्रमिक है, २००१ मे १,२६,६६,३७७ जिसमें ५८,६२,०४१ बच्चियां है और ६८,०४,३३६ बच्चे हैं ।) २०११ में बाल श्रमिकों की संख्या १०१,२८,६६३ है । जिस में बच्चियां ४४,९९,७४८ है । और बच्चे ५६,२८,९१५ है ।

१९८० में बालमजुरों के मुक्ति के लिए आंदोलन प्रारंभ किया । १९८४ में कालीन उद्योग में काम कर रहे बाल मजदूरों को मुक्त कराने का आंदोलन चलाया। १९९० में मुक्ति आश्रम कि स्थापना कि जिस मे बालमजदूरों के आवास और भोजन की व्यवस्था के साथ शिक्षा प्रदान करने का भी प्रावधान किया ।

राष्ट्रीय युवा योजना

राष्ट्रीय एकात्मता युवा शिविर

अहमदनगर (महा.)

३–७ फरवरी २०१५

संपर्क : संदीप कुसाळकर : ०९०११११८७८७

Email : sandip@yuvaan.org

डॉ.आर.सी.गुप्ता : ०९४१५९४७४३७

कथा भारती...

श्रद्धांजली

‘‘बच्चो ! आज हमलोग नये कोर्स में शामिल की गई स्व.राधेमोहन की कहानी ‘समर्पण’ पहली बार पढेंगे । इससे पूर्व कि मै कहानी पढाऊं...मैं राधेमोहनजी के विषय में कुछ बताऊंगी । उनके जीवन पर प्रकाश डालूंगी। कारण, किसी भी साहित्यकार की रचना पढने से पूर्व लेखक के विषय मे जानना अत्यावश्यक है । रचना लेखक के व्यक्तित्त्व का ही प्रतिबिंब होती है । सच्चा साहित्यकार जीवन में जो देखता, सुनता या झेलता है बहुतही इमानदारी से अपनी रचना में उसकी अक्कासी करता है । यह सही है कि विचारों एवं अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने में भाषा पूर्ण रुपसे सहायक नहीं होती है. भाषा अनुभूतियों या भावनाओं को हु–ब–हू अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम नहीं हो पाती है, किन्तु भाषा शब्दों के साथ साथ एक एहसास कराती है. वह एहसास जो शब्दों में नहीं केवल एहसास के द्वारा ही समझा एवं महसूस किया जा सकता है । उदाहरण के रुप में तुम यदि किसी सुगंधवाले फूल को सूधों. तुम जिस रुप में उसकी सुगंध को महसुस करते हो, हु–ब–हू शब्दों में उतार नही सकते । इसी प्रकार आज हम राधे मोहन जी की ‘समर्पण’ कहानी को पढेंगे और भाषा के बजाए भाषा में छिपी राधे मोहन जी की अनुभूतियों एवं भावनाओं को समझने का प्रयास करेंगे । उनकी ‘समर्पण’ कहानी भी कुछ ऐसी ही कहानी है । जिस में नायक अपनी पत्नी एवं साहित्य दोनों के प्रति इस प्रकार समर्पित है की उस समर्पण की अभिव्यक्ती में शब्द उतना काम नहीं करते । जितना उनमे छिपी भावना काम करती है । शब्द या भाषा संकेत मात्र करते है ।’’

‘‘मॅडम ! समर्पण तो किसी एक के प्रति हो सकता है तो फिर समर्पण कहानीकार का समर्पण अपनी पत्नी एवं साहित्य दोनों के प्रति एक साथ कैसे संभव हो सका? ’’ एक छात्रा ने उठकर जिज्ञासापूर्ण प्रश्न किया ।

‘‘बैठो ! तुम्हारा प्रश्न बहुत ही सुंदर एवं सटीक है । किन्तु इस कहानी की यही तो विशेषता है । नायक का पत्नी के प्रति समर्पण उसके लक्ष्य प्राप्ति का माध्यम है। और साहित्य उसका लक्ष्य ! है न चमत्कार ? यहीं आकर लेखक की लेखनी का लोहा मानने को जी चाहता है ।’’

पढाते पढाते उसे राधेमोहन के साथ व्यतीत किए गये जीवन के पंद्रह वर्षों की स्मृति हो आई और भावुकता में उसका गला रुंधने लगा, तो मॅडम ने एक गिलास पानी मंगवा कर पीया । और छात्राओं से कहा, ‘‘तुम लोग ‘समर्पण’को पढो और समझने की चेष्टा करो । संकेत मैने दे दिये है । ’’

इसी के साथ यह सोचने लगी कि, जीवनभर उसे पति से शिकायत रही। उसने अपने पति के समर्पण को कभी समझने की चेष्टा नहीं की । उसके साहित्य एवं और उसके भीतर के साहित्यकार को उसने कभी महत्त्व नहीं दिया । उसके जीवन काल में उसे ये सब व्यर्थ की बकवास लगती थी । आज एक शिक्षिका होने के नाते वह अपनी पति की कहानी को पढाते हुए गर्व का अनुभव कर रही थी । वहीं उसे अपनी पत्नी व्यवहार पर पछतावा भी हो रहा था । उसको स्मरण हो आया कि वह एक बार जब ट्रेन से कहीं जा रही थी, तो एक महिला सहयात्रीने परिचय के क्रम में जब पूछा की उसके पति क्या करते है । तो उसने बहुत उदासीनता से बताया था कि वह कुछ लिखते पढते है । किंतु आज छात्राओं को अपने पति कि ‘समर्पण’ कहानी पढाते पढाते वह अभिभूत हो गयी थी ।

छात्राओं को लगा की, आज जैसे मॅडम नही स्वयं लेखकही उपस्थित होकर अपनी कहानी पढा रहा हो । छात्राओं को भी आज पढने में अभूतपूर्व आनंद की अनुभूति हुई । इस प्रकार लेखक के विषय में गहरी, गंभीर और विस्मृत जानकारी प्राप्त कर छात्राओं को संदेह हुआ कि, मॅडमने अवश्य ही देखा-समझा है । अतः जिज्ञासावश एक छात्रा ने पूछही लिया, ‘‘मॅडम ! क्या आपने लेखक को कभी देखा है ?’’

इस प्रश्न ने मॅडम को आह्लादित कर दिया और गर्व से कह उठी,‘‘हाँ, देखा है वह मेरे पति थे ।’’ इसी के साथ उसके आँखो से आँसू टपक पडे और गला रुंध गया। लगा जैसे एक शिक्षिका और एक पत्नीने एक साथ मिलकर एक लेखक को अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित कर दिए हैं जिसमें छात्राओं का मौन भी शामिल हो चुका है।

- डॉ. सतिशराज पुष्करणा

लघुकथानगर, महेंद्रु, पटना- बिहार - ८००००६

मो. ९४३१२६४६७४, ०८२९८४४३६६३

वार्षिक / आजीवन ग्राहक बनें

संस्था परिचय...

लोकायत

कौन आजाद हुआ ?
किसके माथे से गुलामी की सियाही छूटी ?
मेरे सीने मे अभी दर्द है महकूभी का
मादरे-हिंद के चेहरे पे उदासी हैं वही ...कौन आजाद हुआ ?

स्वतंत्रा प्राप्ती के पश्चात कुछ ही वर्षों मे अली सरदार जाफरी ने उपर्युक्त कविता लिखी थी । पर वे पंक्तियां देश की सांप्रत परिस्थिती का हुबहु वर्णन करती है । स्वतंत्र कौन हुआ है यह प्रश्न है । देश आज केवल धनिकों का हुआ है और विकास भी मात्र उन्हीं का हो रहा है । एक ओर बडे बडे मॉल्स अधुनातन गाडियाँ, एक्सप्रेस हायवेज, दुनियाभर की आयात ऐयाशी वस्तुए, पंचतारांकित अस्पताल... तो दुसरी ओर अत्याधिक जनता को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रुखी-सूखी मिलती थी वह भी उससे छीनी जा रही है ।

विगत दो दशकों से वैश्विकरण के नाम पर महाकाय बहुराष्ट्रीय कंपनीयों को देश मे निमंत्रित किया जाता है । देश आज सिर्फ बडे देश के तथा विदेश के उद्योगपतियों की नग्न फायदे के लिए चलाया जाता है । अत्याधिक लाभ के लिए गरीबों की खेती, जमीन, पाणी पर हिंस्त्र आक्रमण किये जा रहे है । पुलिस न्यायपालिका राजनीतिज्ञों के सहयोग से गरीबों के जीवन साधनों पर कब्जा करके वहां खदान प्रकल्प, विशेष वित्तीय प्रकल्प आलिशान गृहप्रकल्प आदी खडे किये जा रहे है । इस के लिए देश के कायदे कानून बदले जा रहे है । प्रायवेटाजेशन के नाम पर जनता की मेहनत और पैसों की लागत पर बनी बेंको, बिमा कंपनियां माटी के मोल उन्हे सोपी जाती है । खेती भी उन्हे सौंपने की नीति बनाई जा रही है । इसके फल स्वरुप लाखों खेती हर

खुदकशी किए जा रहे है । देश कि साठ प्रतिशत जनता देहात से शहरों के उजडे बस्तियों मे धकेली जा रही है । छोटे उद्योग चलाने वालों को लुटा जा रहा है ।

शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन व्यवस्था, बिजली, पानी, जैसी अत्यावश्यक सेवा, पैसा कमाने के साधन बनाये जा रहे है । हम क्या खाये, क्या पीये, पहने, सोचे, देखे इसका ठेका मानो बहुराष्ट्रीय कंपनीयोने ले रखा है । इसलिए उनकी पूंजीसहित उनकी संस्कृति हमारे यहां बोयी जा रही है ।

जीवनावश्यक वस्तुओं की बढती किंमते हर क्षेत्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार, झुठापण, महाविद्यालयोंकी आकाश को छूति फीस, नौकरी के अवसर ही नहीं है । इस व्यवस्था में हम बिलकुल ही नालायक है । इस तरह का एहसास देनेवाली शिक्षा व्यवस्था और परीक्षा पद्धती, नौकरी न मिलने का कारण आरक्षित व्यवस्था की जात जमात समाज व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराने की वृत्ती, धर्म और आराध्य को लेकर इन्सान को इन्सान से तोडने की धर्मांध राजनीति इन्सान के रुग्ण अवस्था को लेकर किया जानेवाला व्यापार... यदी आज का कटु यथार्थ है ।

...सर्वसामान्य मनुष्य विदेशी कंपनियों के साथ ही मस्तवाल धनियों के खेल केवल देखती रही ऐसे नही । वसंत ऋतु में जैसे जहाँ तहाँ फूल खिल जाते है । वैसे देशभर में विविध स्थलों में लोग संगठित होने लगे और अपना संघर्ष शुरु किया । भले आज संघर्ष छोटे लगे । अलग अलग रहे आनेवाले कल का बीज इन संघर्षों मे छुपा हुआ है । जब ये जडे जमाने लग जायेंगी, ये सारे एकत्रित होंगे और सभी लोग इस लडाई मे संम्मिलित होंगे । तब इनकी ताकत बढेगी ।

हमे तमाशबीन बनकर चुप रहने की वृत्ति को छोडना होगा । सुंदर सपने देखने होंगे। दुनिया बदल सकती है इस पर विश्वास करना चाहिए । जी हां एक और दुनिया बन सकती है । उसके लिए छोटी छोटी लडाईयाँ लढनी चाहिए । हिमालय से निकलने वाली छोटी छोटी नदियों के स्त्रोत एक होकर गंगा बनती है । वैसे सभी लडाइयां जब इकठ्ठा होंगी इसलिए यह मंच'लोकायत' है ।

वैदिक काल से लेकर जो विचार चले आ रहे है वो लोकायत है । लोकायत प्रारब्ध वाद को नकारनेवाली और वास्तववाद, विवेक को स्वीकारनेवाली जीवनदृष्टि है । जीवन का सम्यक दृष्टि से जीने का विचार है । समस्याएं मानवनिर्मित होती है। उनसे दूर भागकर नहीं उनका सामना करना ही असली जिंदगी है । इस तरह की प्रेरणा

हमे लोकायती विचार देते है । इसी परंपरा को हम स्वीकारते है । इसलिए इस मंच का नाम लोकायत है । समविचारधारा के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर जिन्हे यह दुनिया बदलने की इच्छा है । कुछ करने की इच्छा है । उन्हें साथ लेकर कुछ नियोजन कर उन्हें कार्यान्वित करते है । जैसे आस्पातालों का प्रायव्हेटाजेशन नगरों की सार्वजनिक परिवहन समस्या आणविक उर्जा के उपायों से मानव को जागृत करना. बी.टी. बैंगन के दुष्परिणाम जैसे लोंगो के संबंधित महत्त्वपूर्ण समस्यांओ को लेकर आम आदमी को सजगकर उन्हे संगठित करने का प्रयास करते है । इनके अतिरिक्त 'पेप्सी-कोक', भारत छोडो' 'फिर से भोपाल नहीं चाहिए'न्याय व्यवस्था को उत्तरदायित्व और सुधार अभियान मे भी हम सक्रिय सहयोग देते है । तदर्थ इन विषयों पर पथनाट्य (स्ट्रीटप्ले) पोस्टर प्रदर्शन, गाने जैसी कलाओं का उपयोग करते है । उसी तरह सेमिनार, भाषण, धरना, मोर्चा आम सभाओं का आयोजन करते है ।

समाज की समस्याएँ जैसे विकास के नामपर उजडता जनजीवन, जातीय दंगे, ऐशोआराम की लालसा, अमेंरिका की मनमानी, जागतिक तापमान वृद्धी आदि विषयोंपर जानकारी देनेवाली फिल्मे दिखाते हैं । उन पर संगोष्ठियों का आयोजन करते है, इन से जनजागरण करने का प्रयास करते है ।

युवाओं से संवाद करने के लिए कई विचारप्रधान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन महाविद्यालयों में करते हैं ।

'आगाज' नाम का फिल्म और सांस्कृतिक क्लब चलाते हैं । समाज में व्याप्त विविध समस्याएँ. कला और सांस्कृतिक माध्यम से नृत्य, गीत, नाटक, चलचित्र के माध्यम से जनजागरण करने का प्रयास करते हैं ।

महिलाओं की समस्याओं पर नाटक, फिल्म के माध्यम से कॉलेजों में तथा बस्तियों में काम करते हैं ।

इन प्रश्नों पर काम करते हुए आवश्यक विषयों पर बुलेटिन तथा पुस्तकें प्रकाशित करते हैं ।

मित्रों हम आप जैसे ही सर्वसामान्य हैं । आप से हम परिचित भी नही । फिर भी हमें उम्मीद हैं कि हमने जो बातें आपके सामने रखी हैं उनसे आप सहमति रखते हैं। मात्र सहमति ही नही आप हमारे कार्य में प्रतिभागी बनें । आप हम से निम्नांकित पते पर संपर्क कर सकते हैं ।

पुणे
लोकायत,
सिंडीकेट बँक के सामने,
लॉ कॉलेज रोड,
नळस्टाप के पास
पुणे-४११००४
संपर्क- अलका-९४२२३१९१२९
ऋषिकेश - ९४२३५०७८६४
(प्रति रविवार उपर्युक्त पतेपर
दोपहर ४ से ७ बैठक होती है)
Email:neeraji61@gmail.com

पिंपरी
कर्मचारी महासंघ कार्यालय
ग्राउंड फ्लोअर, पिंपरी चिंचवड
महानगरपालिका पिंपरी
संपर्क
बाळकृष्ण- ९४२२०३५६९६
सुलोचना - ९८२३८५०४८१

(प्रति गुरुवार उपर्युक्त पतेपर
शाम ६ से ८ बैठक होती है)
Website : www.lokyat.org.in

(हिंदी में अनुवाद : डॉ. इरेश सदाशिव स्वामी, सोलापूर)

राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली आयोजित

राष्ट्रीय एकात्मता एवं शांती युवाशिविर

१) उडीसा - जन, २०१५
संपर्क : श्री. मधुसूदन दास मो.०८८९५७९९१९०
२) कोकराझार (आसाम)
फरवरी २०१५
३) जम्मू (कश्मीर) - मार्च २०१५
४) नई दिल्ली
अप्रैल / मई २०१५

के.सुकुमारन - विश्वस्त, रा.यु.यो.

काव्य भारती...१

मराठी कविता

उनके उच्छ्वास

अशोक कोतवाल

भीड में जो अगुआ है
खसियाया गया है उन्हें
और सुन्न कर दिये गये हैं
उनके हाथ

निचोड ली गई है
उनके चेहरे की आबदारी
और से सदा स्वीकृती में हिलनेवाली
गर्दन की ऐंठन

ऐसे नहीं थे वे
जब उन्होंने धत्ता बताया
यहां के वाहियात कामचलाऊ मूल्यों को
और पंगा लिया व्यवस्था से

ये हठात् भीतर से वैसे नहीं है
जैसे दिखते हैं
शायद उनके उच्छ्वास
बन भी जाएं शक्तिशाली
अणु-परमाणु अथवा
जहरिले विषाणु

अनुवाद-प्रकाश भातंब्रेकर
१२, न्यूरोज विला, गोरेवाडी,पं.सातवलेकर मार्ग,
माहिम मुंबई-४०००१६
मो.०९३२४४०९४९०

बस्ते घर से गए पर...

बस्ते घर से गए पर
लौट न पाये आज
बसनेसे पहले हुईं
नष्ट बस्तियाँ आज
है दहशत का राज
नदी खून की बह गयी
लज्जा को भी लाज
इस वहशत से आ गयी
गया न लौटेगा कभी
किसको ! अंदाज़?
लिख पाती बंदूक
कब सुख का इतिहास?
थामें रहें उलूक
पादेते-हैं त्रास
रहा चरागों के तले
अन्धकार का राज
०५२! कर रहम
नफरत का अब नाश हो
दफ़्न करें आतंक हम
नष्ट घृणा का पाश हो
मज़हब कहता प्यार दे
ठुकरा तख्तो- ।

आचार्य संजीव वर्मा सलिल
२०४, विजय अपार्टमेन्ट,
नेपियर टाउन,जबलपुर ४८२००१
http://divyanarmada.blogspot.com
०७६१-२४१११३१/९४२५१८३२४४

राष्ट्रीय एकात्मता शिबीर के दल २० से २६ दिसं.१४ के लिए आंतर भारती की शुभ कामनाएं

राष्ट्रीय युवा योजना आयोजित आन्तर भारती राष्ट्रीय बाल आनन्द महोत्सव लहरागागा (पंजाब)

दिनांक २० से २४ नवम्बर २०१४ का संक्षिप्त बिन्दू वत विवरण

(गत और इस अंक के मुखपृष्ठोंपर प्रकाशित छायाचित्र)

२० नवम्बर २०१४.

१७ राज्यों से ४०० बच्चों ने तथा स्थानीय ४०० बच्चों ने निकाली सद्भावना रैली- लहरागागा में आयोजित राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव में बच्चों ने लिया बढचढकर हिस्सा, बाल आनंद महोत्सव शुरु । देशभर के बच्चे सहभागी (१७ राज्यों के) बच्चों ने दिया एकता का संदेश -पहले दिन निकाली सद्भावना रॅलीः जो मनुष्य जात-पात का भेदभाव मिटाकार सभी धर्मों का सम्मान करता है,वही सच्चा हिन्दुस्तानी है. सभी को मिलजुल कर रहना चाहिए ताकि भारत देश हर क्षेत्र में नई बुलंदियों को छू सको. विचार पूर्व मुख्यमंत्री व विधायक बीबी राजिन्दर कौर भट्टल के लहरागागा में चल रहे राष्ट्रीय बाल आनन्द महोत्सव में डॉ.एस.एन. सुब्बाराव के द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना के बाद १७ राज्यों से आए नन्हें-मुन्नें बच्चों को संबोधित करते हुए कही.

२१,२२ नवम्बर २०१४

प्रातः ९ बजे स्थानीय विद्यार्थियों के घर के अतिथि अर्थात बालमहोत्सव के सहभागी विद्यार्थी अपने यजमान विद्यार्थियों के साथ लहरागागा के साबा स्कूल में एकत्रित हुए. झंडावन्दन में सम्मिलित हुए. उसके बाद दोपहर १२ तक इन बच्चों ने प्रतिभा विकास के मुक्त अवसर का लाभ उठाकर अपनी इच्छानुसार वहाँ उपलब्ध अनेक गतिविधियों में से अलग अलग गतिविधियों में भाग लिया. कोई चित्रकला में, कोई पोस्टर बनाने में, कोई कोलाज करने में, कोई छपाई करने में, कोई रांगोली निकालने में, कोई जूडो कराटे करने में कोई कागजकाम में, काई मिट्टी के शिल्प बनाने में, कोई नृत्य करने में, कोई संगीत कक्ष में, कोई अभिनय कक्ष में, का ई वाचनलेखन

कक्ष में अपनी प्रतिभा और कौशल के अनुसार अभिव्यक्ति करने में जुट गया. इस तरह लगभग तीन घंटे तक ये ऐसी अभिव्यक्ति में लगे रहे. यहाँ स्वयं शिक्षण का मार्ग ही उपलब्ध था. कोई अध्यापन या मार्गदर्शन नहीं था.

दोपहर साढे १२ बजे से बच्चों ने स्वेच्छा भोज स्वादिष्ट पंजाबी व्यंजनों का प्राप्त किया.

उधर बच्चों के साथ आए शिक्षकों ने उनके लिए आयोजित संवाद गोष्ठी में ९.३० से १२ बजे तक अपने आप को व्यस्त रखा. श्री. सत्य प्रकाश भारत प्रमुख अतिथि थे. दूसरे दिन इसी संवाद में गुजरात के श्री. हर्षद भाई रावल मुख्य अतिथि थे.

दोपहर में बच्चों ने व्याख्यान कौशल सीखने के लिए मंच पर आकर अलग अलग भाषाओं में विचार व्यक्त किए.

तत्पश्चात दोनों दिन आयोजित अपने अपने प्रान्त के सांस्कृतिक समूहनृत्य प्रस्तुत किए.

तत्पश्चात अल्पाहार कर छात्रों ने साधन विरहित मैदानी खेल खेलकर आनन्द लूटा. शाम ५.३० बजे उन्होंने माननीय डॉ.एस.एन.सुब्बाराव जी के नेतृत्व में सर्वधर्म प्रार्थना की और स्कूल बसों में बैठकर अपने साथी यजमाने के साथ घरों पर चले गए. इसी बीच कर्मजीत अनमोल ने बच्चों का भरपूर मनोरंजन किया.

२३ नवम्बर २०१४

प्रातः९ बजे झंडावन्दन कर दर्शनीय स्थल देखने स्कूल की विभिन्न बसों में सवार हो गए. १७ राज्यों से ४०० बच्चे और स्थानीय ४०० बच्चे ननकाना साहिब पहुंचे.

भारत के १७ राज्यों के ८ बच्चों के काफिले ने आज स्थानीय गुरुद्वारा नानकाना साहिब, संगरुर, के दर्शन किए. नैशनल यूथ प्रॉजेक्ट के निर्देशक डॉ.एस.एन.सुब्बाराव की अगुवाई में पहुंचे इन बच्चों ने समाज में राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया व लंगर साहिबा में प्रसाद प्राप्त किया.

बालं आनन्द महोत्सव के ८०० बच्चों ने शहीद उद्यमसिंह को सुनाम जाकर नमन किया. राष्ट्रीय बाल आनन्द महोत्सव में हिस्सा लेने आए थे बच्चे. बंद होने के कारण नहीं देख सके शहीद का घर. ओलंपिक स्टेडियम में स्थापित प्रतिमा को दी श्रद्धांजलि. सद्भावना रैली निकाल दिया सभी धर्मो के सम्मान का संदेश, शहीद के घर की खराब हालत देखकर छात्रों मे निराशा.

२४ नवम्बर २०१४

ध्वजवंदन, विविध गतिविधियों के पश्चात साढे १२ बजे भोजन प्राप्त कर दोपहर

में समारोप में मुख्य मंडप में एकत्रित हुए.

पंजाब की मेहमान नवाजी से बहुत प्रभावित हुए बाहरी १७ राज्यों के बच्चे । राष्ट्रीय बाल आनन्द महोत्सव २०१४ के अंतिम दिन बाहरी राज्यों से आऐ बच्चे पंजाबी मेजबान बच्चों के घर से भावुकता भरे माहौल में विदा हुए. नम आंखो से गले मिलकर छोटे-छोटे बच्चों का आपसी प्यार देखकर दूसरे पारिवारिक सदस्यों के साथ पडौसी भी भावुक हो गए कि विगत दिनों से लगी रौनक जा रही है. बच्चों में यद्यापि भाषा की समस्या थी परन्तु यह प्यार एवं आपसी भाईचारे के मुकाबले छोटी थी. पांच छह दिनों के इस सांस्कृतिक विचार -विमर्श, देशभक्ति एवं बाल मनों के भीतर कला का चसका लगाने की कोशिश नेशनल यूथ प्रोजेक्ट के निर्देशक डॉ.एस.एन.सुब्बाराव के नेतृत्व में पूरी हुई जिसमें १७ राज्यों के ८०० बच्चों ने भाग लिया. इस बाल मेले के अंतिम कार्यक्रम में बच्चों को सर्टिफिकेटों के साथ स्मृति चिन्ह के रुप में किताबें बांटने की रस्म रामसिंह छाजली, भगवंतसिंह रुपी कोटडा, रविन्द सिंह पापडा ने की इस अवसर पर कार्यक्रम के कोआर्डिनेटर कंवलजीत ढिंडसा को नेशनल युथ प्रोजेक्टद्वारा एवं कर्नाटका युनिट द्वारा राष्ट्रीय झंडा, मणिपुर एवं महाराष्ट्र द्वारा हाथ से बने शाल्गें से समान्नित किया गया.

दिनांक २० नवम्बर को लहरागागा में नगर के बीच पंजाब की भूतपूर्व मंत्री की उपस्थिति में तथा २१ नवम्बर को बालमहोत्सव में एवं २३ नवम्बर को संगरुर जिले के सुनाम में महोत्सव के बच्चों ने भाई डॉ. सुब्बारावजी के बहुभाषी गीत के गायन पर श्री. नरेन्द भाई के मार्गदर्शन में भारत की सन्तान की प्रस्तुती दी.

(समाचार पत्रों पर आधारित संक्षिप्त संकलन डॉ. मधुश्री आर्य)

राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना युवा शिवीर ललितपुर (उ.प्र.)

१६ से २० जनवरी १५

आयोजक

राष्ट्रीय युवा योजना, उ.प्र.

संयोजक

जन चेतना मंच एवं समस्त समाजसेवी, ललितपुर (उ.प्र.)

पंढरपूर सत्याग्रह एवं एदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह

१० मई २०१५

इसबार आसाम में विशेष आयोजन

आयोजक

श्री. हरिश भट्ट

कोकिला विकास आश्रम

ग्रा.पो.सोनपूर वाया-गोहपुर-७८४१६८

जि.सोनपूर (आसाम)

harishbhatt132@gmail.com

mo.09435563879/09435183391

अभी से इसे नोट कर समय पर रेल आरक्षण कर लें देश के किसी भी कोने से सिलीगुडी पहुंचे. एक दिन में दार्जीलिंग देखें और सिलीगुडी से गोहपुर के लिए रेल है. गोहपुर से आयोजक आपको ले जाएंगे.

इसी निमित्त उत्तर पूर्वी भारत देखना हो तो ७ दिन अतिरिक्त देकर प्रवास, निवास, भोजन खर्च के लिए रु.७००० लगेंगे, गोहपुर तक का तथा वापसी का रेल खर्च स्वयं करना होगा. केवल २५ लागों की व्यवस्था हो सकेगी उ.पू. भारत दर्शन के लिए. अतः रु.७००० भेजकर आरक्षण करवाएं जनवरी १५ तक.

: यात्रा संयोजक :

हर्षद भाई रावल ०८१४१९७३३४१